मनोविनोद

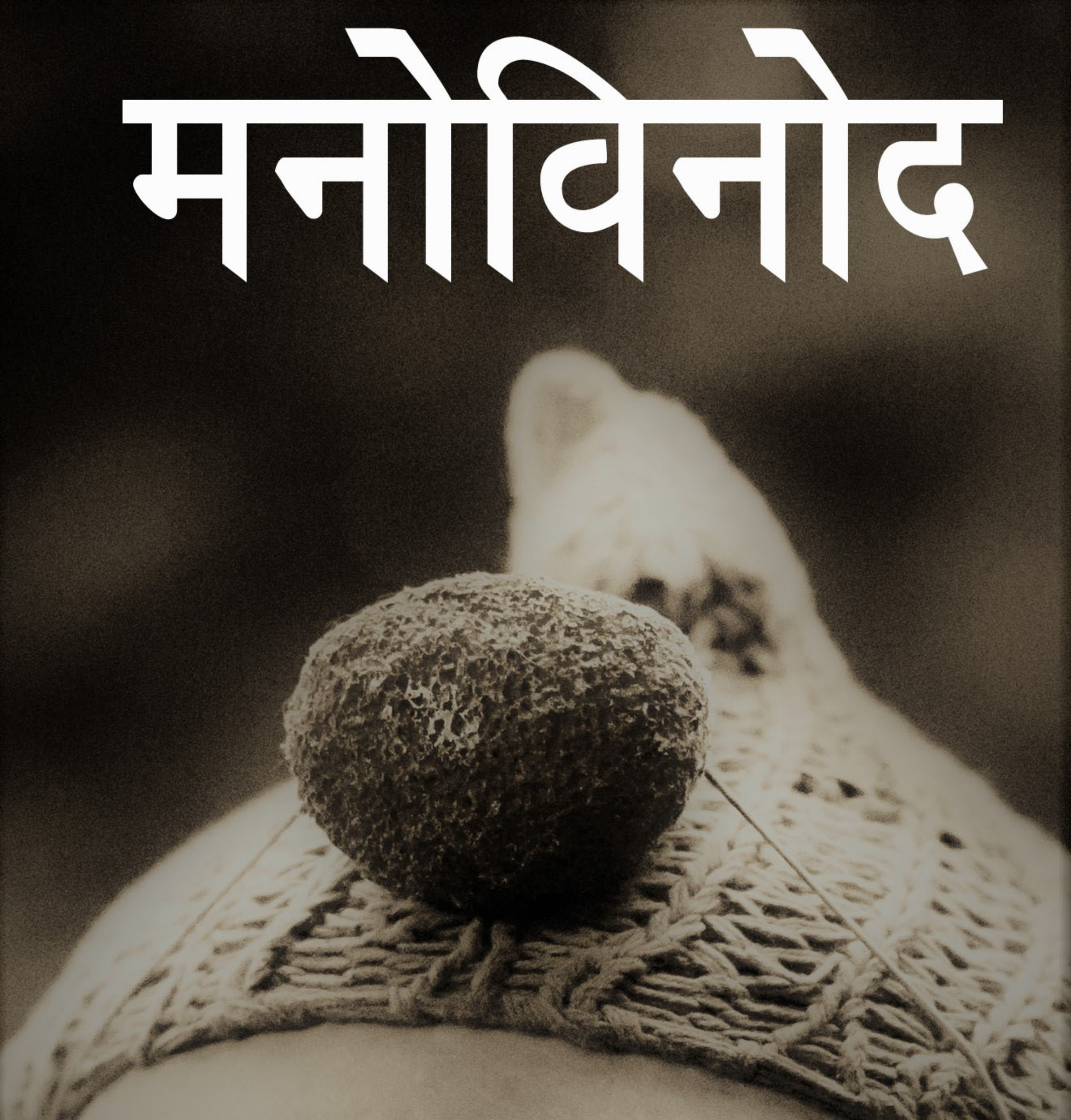

शंकर सुल्तानपुरी

प्राक्कथन

मनोविनोद मानव-मन की प्रकृति और प्रवृत्ति के सहज परिचायक होते हैं, उनमें अंतर्निहित प्रेरक तत्व हमें स्पंदित, रोमांचित करते हैं। विनोद का आधार परस्पर मनोरंजन है। यह व्यंग्य नहीं, पर कहीं-कहीं परिस्थिति जन्य अभिव्यक्ति में वक्रोक्ति का आभास कराता है। विनोद का आशय दिल दुखी करना नहीं बल्कि दुखी दिल को हंसी-ठहाकों से भर देना है। विनोद चटपटा स्वाद देता है। मन को ऊर्जा प्रदान करने का इससे अच्छा टॉनिक क्या हो सकता है? अनुभव कीजिए तो यह व्यंजन में मीठी चटनी के समान है।

महापुरुषों के मनोविनोद और संस्मरणात्मक प्रसंगों को पुस्तकाकार प्रस्तुत करने की प्रेरणा मुझे देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू से मिली।

स्वामी विवेकानंद ने मनोविनोद को मन की विकार-वायु का हर्ता कहा है। जो पीड़ा में भी विनोद की चुस्कियों के माध्यम से अपना और दूसरों का दर्द सहलाते हैं, वे सच्चे मनोविनोदी हैं। हंसना-हंसाना और जीवन सुखी बनाना यही स्वरूप मनोविनोद की परंम्परा है।

प्रस्तुत संकलन में देश-विदेश के ख्याति प्राप्त व्यक्तियों, महापुरुषों, राष्ट्रसेवा एवं साहित्य के क्षेत्र में श्रेष्ठ उपलब्धियों और सम्मानों से विभूषित विभूतियों के मनोविनोद के प्रसंग प्रस्तुत किए गए हैं। ये प्रसंग पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, श्रुत कथाओं, समकालीन व्यक्तियों की चर्चा और साक्षात्कार के अंशों तथा टिप्पणियों पर आधारित हैं। ये मात्र चुटकुले, लतीफे या हंसगुल्ले नहीं, स्वस्थ मनोरंजन एवं माननीय संवेदना के संवाहक हैं। इनमें महापुरुषों की अंतर्वृत्ति एवं मानवतावादी दृष्टि का सरस, रोचक दर्शन होता है, चित्त को प्रसन्नता की अनुभूति होती है। मैंने मनोविनोद के इन प्रसंगों को कथा-शिल्प देने का प्रयास किया है।

इस पुस्तक में शामिल किए गए अनेक प्रसंग जाने-माने पत्रकार एवं स्वतंत्रता सेनानी पुरुषोत्तम दास गौड़ 'कोमल' के माध्यम से उपलब्ध हुए हैं; जिनके लिए मैं उनका आभारी हूं। प्रसिद्ध साहित्यकार श्री कमलेश भट्ट 'कमल और अपनी सहधर्मिणी कमलेश शंकर का भी मैं विशेष आभारी हूं जिनके सहयोग और सुझावों से यह कृति आपके सामने है।

मैं उन सभी के प्रति आभार प्रकट करता हूं जिनके लेखांशों का इसमें प्रयोग हुआ है।

शंकर सुल्तानपुरी

अनुक्रम

1.	राजनेताओं के विनोद	1
2.	कवियों के कहकहे साहित्यकारों की ठिठोलियां	35
3.	समाज सुधारकों की विनोदप्रियता	74
4.	शहीदों के हास-परिहास	80
5.	विदेशी हस्तियों के हास्य प्रसंग	85

राजनेताओं के विनोद

देश को स्वतंत्रता मिलने के पश्चात बापू ने सेवाग्राम के सदस्यों से कहा- स्वराज्य का संकल्प पूर्ण हुआ, अब आप सब यथाशक्ति राष्ट्र निर्माण के कार्य में लग जाइए...।

सदस्य यथा योग्य काम-धंधों में जुट गए। उनमें थे एक ग्रामवासी।

ग्रामवासी ने बापू के समक्ष विचार रखे। "बापू! तेलीय व्यवसाय हमारा पुश्तैनी कार्य रहा है। मैं सोचता हूं, मस्तिष्क को शीतल रखने वाला एक स्वास्थ्यवर्धक तेल बनाऊं...। दिमाग ठंडा रहेगा तो मन में शांति रहेगी. . . और शांति तो अहिंसा की जननी है।"

बापू को ग्रामवासी के विचार पसंद आए। उन्होंने प्रोत्साहित किया, हां, इससे औरों के लिए भी आजीविका के द्वार खुलेंगे...।

इससे उत्साहित ग्रामवासी ने देशी जड़ी-बूटी के उपयोग से 'शीतल शिरोमणि' का निर्माण किया। मन में व्यवसायिक सोच आई। इस उपलब्धि को यदि बापू स्वीकार लें तो सोने में सुहागा होगा...। शीतलता की संस्तुति बापू के शब्दों में...। अहा तब तो यह चल निकलेगा...!

शीतल शिरोमणि की पहली शीशी और सलाहकार मित्र के साथ ग्रामवासी बापू की शुभ-कामना और आशीर्वाद लेने पहुंचे। बोले, "बापू इस शीतल शिरोमणि पर कुछ अमूल्य शब्द कहें। यह आपकी प्रेरणा का सुफल है।"

बापू हैरान...! मेरे सिर पर तेल का क्या उपयोग...। मैं इसके बारे में क्या कह सकता हूं? मेरे सिर पर तो बाल ही नहीं हैं।

ग्रामवासी निराश हुए!...अब इस उत्पाद को कौन पूछेगा?

"ठीक है! मैं भी गरीबों के लिए कुर्ते बनवाने में आपकी मदद करूंगा..."

बड़ी ललक से शीशी का ढ़क्कन खोलकर दिखाते हुए बोले, ''देखिए बापू! कितना शीतल शिरोमणि...।''

बापू झिझके...। ग्रामवासी के साथी को विनोद सूझा। उसकी कोहनी के धक्के से ग्रामवासी के हाथ का संतुलन बिगड़ गया...फलतः कुछ तरल बूंदें बापू के सिर पर टपकीं...।

ये क्या...? बापू का हाथ सिर पर चला गया। ग्रामवासी ने आतुरता से पूछा - ''कैसा लगा बापू?''

बापू उनकी शरारत ताड़ गए।... मुस्कराए, अब तो कहना पड़ेगा...। लिखा-शीतल शिरोमणि की कुछ बूंदें 'शरारतन' मेरे सिर पर टकराई गईं... मुझे ठंडा-ठंडा लगा...।

ग्रामवासी पुलक उठे। वाह! अपना काम बन गया...।

बापू उनकी इस चतुरतापूर्ण युक्ति पर खूब हंसे। *-सुरेन्द्र भारद्वाज*

शाबाश नन्हे साथी

प्रातःकाल बापू चरखा कातने में व्यस्त थे। कहीं से एक भोला बालक आकर उनके निकट बैठ गया। बापू को सिर्फ एक धोती पहने देखकर उसे अजीब सा लगा। उसने बापू से प्रश्न किया, ''बापू! आप नंगे बदन हैं! एक कुर्ता क्यों नहीं सिलवा लेते?''

बापू के मुख पर मधुर मुस्कान उभर आई। बोले, ''मैं कुर्ता नहीं सिलवा सकता।''

''क्यों? क्या आपके पास इतने पैसे भी नहीं हैं कि एक कुर्ता सिलवा सकें?''

बापू बोले - ''सो बात नहीं...। असल में...।''

बालक - ''कोई बात नहीं। मैं आपके लिए कुर्ता सिलवाकर लाऊंगा।''

बच्चे के भोलेपन पर बापू के मुख पर करुण मुस्कान खिली, ''भई एक कुर्ते से तो मेरा काम चलेगा नहीं...।''

''बालक - ठीक है... दो ले आऊंगा।''

बापू बोल पड़े ''बच्चे! मेरा काम दो, चार कुर्तों से नहीं चलेगा। मुझे तो करोड़ों कुर्ते चाहिए। हमारे देश में कितने ही गरीब लोग नंगे बदन रहते हैं, जब तक उनको कुर्ते नहीं मिल जाते मैं कैसे पहन सकता हूं?''

बालक ने बापू की बात समझी। ''ठीक है। मैं भी गरीबों के लिए कुर्ते बनवाने में आपकी मदद करूंगा...।''

''शाबाश मेरे नन्हे साथी...।'' बापू बच्चे की पीठ ठोंकते खूब हंसे। बापू के साथ बच्चा भी चरखा कातने में जुट गया।

अनोखी चाहत

आजादी के आस-पास...

भारत में एशियाई राष्ट्रों का एक प्रतिनिधि सम्मेलन हो रहा था। उस सम्मेलन में आए एक तिब्बती प्रतिनिधि ने दिल्ली में महात्मा गांधी से भेंट की और उन्हें सादर कई उपहार दिए। इनमें दो बहुत ही महीन और मुलायम अंगौछे भी थे।

बापू ने अंगौछे लेकर उन्हें टटोला फिर विस्मय विमुग्ध होकर बोले - ''इतने महीन और कोमल अंगौछे कहां बनते हैं?''

'चीन में' प्रतिनिधि ने उत्तर दिया।

''अच्छा। चीन में केवल बुनाई ही होती है या इसका सूत भी काता जाता है?''

''कताई और बुनाई दोनों ही काम चीन की युवतियां बड़ी खुशी से करती हैं।'' प्रतिनिधि का उत्तर था।

इस पर बापू हंसते हुए बोले, ''जिस चीनी युवती ने महीनों के श्रम से इतना सुंदर अंगौछा बुना है, उसको ढूंढ़ लाओ। मेरी अवस्था अब काफी हो चुकी है फिर भी मैं उस युवती से शादी करने को तैयार हूं।''

बापू के इस विनोद पर तिब्बती प्रतिनिधि हंसते-हंसते लोट-पोट हो गया।

कृपलानी का करिश्मा

अंग्रेज सरकार जब बापू को चम्पारन सत्याग्रह से नहीं हटा सकी तो उसने एक और चाल चली। अपने हुक्मरानों के जरिए बापू को दिग्भ्रमित करने का प्रयास किया। कहलाया - ''आपके कई साथी, सहयोगी बड़े कुटिल और अविश्वसनीय हैं, आप उनकी बातों में आकर आंदोलन को हवा न दें।''

इस कथन पर बापू के अधरों पर मुस्कान आई। बोले, ''आप लोग तो उनसे कभी-कभी मिलते होंगे। ...मैं तो उनके साथ रात-दिन रहता हूं। निजी अनुभव से कहता हूं कि वे लोग मुझसे ज्यादा अच्छे हैं...। बुरा मैंने किसी को नहीं पाया...।''

पुलिस कमिश्नर मौजूद था। वह उखड़कर बोला, ''आपके साथ वह जो प्रोफेसर कृपलानी है न...। उसका रिकार्ड बहुत खराब है। यह शख्स शरारती और भड़काने वाला है।''

इस पर बापू हंसे, ''आप जानते हैं! वह कृपलानी तो हमारे यहां घर का काम-काज करते हैं। श्रीमती गांधी के साथ रसोई के काम में लगे रहते हैं। वे कौन सी शरारत कर सकते हैं। वह तो हमारे रसोइया हैं।''

कमिश्नर इस बात पर हैरान हुआ कि बिहार के विद्यार्थियों को भड़काने वाला नामी प्रोफेसर कृपलानी यहां रसोइया बनकर क्यों रह रहा है?

बापू ने चुटकी ली--कभी आकर देखिए। बेचारे को सिर उठाने की फुर्सत भी नहीं मिलती..।

हुक्मरानों को तसल्ली न हुई। कृपलानी की सच्चाई जानने के लिए उन्होंने रसोई घर में ताक-झांक शुरू की। तू डाल-डाल मैं पात-पात की तर्ज पर बापू ने कृपलानी को सचेत कर दिया...। बस वे ब्रिटिश नौकरशाही को कभी रसोइयां कभी घरेलू नौकर और कभी माली बनकर चमका देते रहे और अभिनय का आनंद लेते रहे।

अंग्रेज जब तक कुछ कर पाते कृपलानी फरार हो चुके थे। उनके विनोद पूर्ण चातुर्य पर राजेन्द्र प्रसाद जी ने मजेदार टिप्पणी की - खूब स्वांग रचे. . .! अंगरेजन को खूब चकमा देहिनी...। *- काका कालेलकर*